कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



1. व्याख्या करें –

(क) उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन से जुड़ी क्यों थीं।

उत्तर :

(क) उपनिवेशों (जैसे भारत) में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन से जुड़ी हुई थीं।

- औपनिवेशिक शासकों के विरूद्ध संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को समझने लगे थे।
- उत्पीड़न एवं दमन के शिकार रहे लोगों ने मिल-जुल कर मुकाबला किया था जिससे वे एकता के सूत्र में बँध गये थे।
- उनको लग गया था कि औपनिवेशिक शासन को समाप्त किये बिना उनके कष्टों का अंत नहीं होगा।
- इस विचार ने भी राष्ट्रवाद की भावना का उदय किया।

(ख) पहले विश्व युद्ध ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में किस प्रकार योगदान दिया?

उत्तर :- भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में प्रथम विश्व युद्ध का बहुत योगदान रहा –

(i) करों में वृद्धि :-

- प्रथम विश्व युद्ध के कारण रक्षा-व्यय में अत्यधिक वृद्धि की गई थी।
- इस खर्चे की भरपाई के लिए करों में वृद्धि कर दी गई।
- सीमा-शुल्क बढ़ा दिया गया तथा आयकर शुरू कर दिया गया।

(ii) मूल्यों में वृद्धि :-

- युद्ध के दौरान 1913-1918 के बीच कीमतें बढ़ कर दोगुना हो चुकी थीं। जिससे आम लोगों की मुश्किलें बढ़ रही थीं।

(iv) सिपाहियों की जबरन भर्ती :-

- गाँवों में सिपाहियों को जबरन भर्ती किया गया जिससे ग्रामीण इलाकों में व्यापक गुस्सा था।

(v) दुर्भिक्ष तथा महामारी का प्रकोप :-

- 1918-19 तथा 1920-21 में देश के बहुत सारे हिस्सों में फसल खराब हो गई जिसके कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव हो गया।
- उसी समय फ्लू की महामारी फैल गयी।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 1921 की जनगणना के अनुसार दुर्भिक्ष तथा महामारी से 120–130 लाख लोग मारे गये।

(v) लोगों की उम्मीद पूरी न होना :-

- लोगों को उम्मीद थी कि युद्ध खत्म होने के बाद उनकी मुसीबतें कम हो जायेंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
- इस कारण से भारतीयों में घोर असंतोष व्याप्त हो गया तथा इससे राष्ट्रवाद में विकास हुआ।

(ग) भारत में लोग रॉलट-एक्ट के विरोध में क्यों थे?

उत्तर :- मार्च 1919 में रॉलेट- एक्ट भारत में राष्ट्रीय आंदोलनों को खत्म करने के लिए बनाया गया था। इस कानून के जरिये सरकार को

(i) राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने तथा

(ii) राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमा चलाये 2 साल तक जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।

- इस प्रकार से ब्रिटिश सरकार भारत के राष्ट्रीय आंदोलनों को कुचलना चाहती थी।
- प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार की सैनिक एवं आर्थिक सहायता करने के पश्चात् भी इस प्रकार का काला कानून बनाया गया था।
- अत: भारत में लोग रॉलट-एक्ट के विरोध में उतर आये।

(घ) गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का फैसला क्यों लिया?

उत्तर :- जनवरी 1921 में असहयोग आंदोलन शुरू हुआ।

- जब असहयोग आंदोलन अपनी चरम सीमा पर था।
- शहरों, गाँवों एवं बागानों तक फैल गया था।
- सभी वर्ग शहरी, ग्रामीण, किसान, आदिवासी, व्यापारी, श्रमिक इसमें शामिल हो गये थे।
- यह व्यापक-जन आंदोलन हो गया था।
- उसी समय 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर में चौरी-चौरा नामक स्थान पर सत्याग्राहियों और पुलिस के बीच हिंसक टकराव हो गया।
- गुस्साई भीड़ ने एक थाने में आग लगा दी जिसमें कई पुलिस वाले जल कर मर गये।
- गाँधीजी में इस हिंसात्मक घटना से दुखी होकर असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

2. सत्याग्रह के विचार का क्या मतलब है?

उत्तर : सत्याग्रह –

सत्य का शक्ति से आग्रह

और

इसमें सत्य की खोज पर जोर दिया जाता है।

- इसका अर्थ है कि "यदि आपका उद्देश्य सच्चा है और आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है तो उत्पीडक से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है।
- प्रतिशोध की भावना के बिना ही सत्याग्रही अहिंसा के द्वारा अपने संघर्ष में सफल हो सकता है।
- इसमें शत्रु को इस बात के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए कि हिंसा की बजाय वह सच्चाई को सहज भाव

Download Mission Gyan App
LET'S LEARN TOGETHER
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

से ही स्वीकार कर ले।

- सत्याग्रह शारीरिक बल नहीं है। न ही इसमें शत्रु को कष्ट पहुँचाया जाता है।
- सत्याग्रही अपने शत्रु के लिए न तो दुर्भावना रखता है और न ही उसका विनाश चाहता है।
- सत्याग्रह तो शुद्ध आत्म-बल है और सत्य ही आत्मा का आधार है। इसलिए इस बल को सत्याग्रह नाम दिया गया है।
- इस संघर्ष में अंतत: सत्य की विजय होती है।

3. निम्नलिखित पर अखबार के लिए रिपोर्ट लिखें-
(क) जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड
(ख) साइमन कमीशन

उत्तर : (क) जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड :-

- गाँधीजी ने 1919 में रॉलेट एक्ट के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन प्रारंभ किया था।
- जो कि 6 अप्रैल-1919 से प्रारंभ किया गया था।
- 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में बहुत सारे गाँव वाले सालाना बैसाखी मेले में शिरकत करने के लिए आये थे।
- काफी लोग सरकार द्वारा लागू किये गये रॉलेट-एक्ट का विरोध करने के लिए एकत्रित हुए थे।
- यह मैदान चारों तरफ से बंद था।
- शहर के बाहर के होने के कारण वहाँ जुटे लोगों को यह पता नहीं था कि इलाके में मार्शल-लॉ लागू किया हुआ है।
- जनरल डॉयर हथियार बंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और जाते ही उसने मैदान से बाहर निकलने के सारे रास्ते बंद करवा दिये और उसके सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दी। जिससे सैकड़ों लोग मारे गये।
- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की सम्पूर्ण देश में कटु आलोचना की गई और इसके विरोध में उत्तर भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतर आये थे।
- हड़तालें होने लगी तथा लोग सरकारी इमारतों पर हमला करने लगे।
- सरकार ने इन कार्यवाहियों को निर्ममता से कुचला।

हिंसा फैलते देख महात्मा गाँधी ने आंदोलन वापिस ले लिया।

(ख) साइमन कमीशन :-

- ब्रिटेन की नई टोरी सरकार ने 1927 में सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक 'वैधानिक आयोग' का गठन किया।
- राष्ट्रवादी आंदोलन के जवाब में गठित इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन कर सुझाव देने थे।
- इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था, सभी अंग्रेज थे।
- 3 फरवरी 1928 में जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो 'साइमन कमीशन गो बैक' के नारों से उसका स्वागत किया गया।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी पार्टियों ने विरोध प्रदर्शनों में हिस्सा लिया।
- साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने लाहौर में आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। जिससे अंग्रेज सरकार हिल गई।
- शांतिपूर्ण जुलूस निकालते हुए लाला लाजपत राय पर लाठियाँ बरसाईं। जिससे 17 नवम्बर 1928 को लाला लाजपत राय शहीद हो गए।
- इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लार्ड इरविन ने अक्टूबर 1929 में भारत के लिए 'डोमिनियन स्टेट्स' का ऐलान कर दिया।

4. इस अध्याय में दी गई भारतमाता की छवि और अध्याय 1 में दी गई जर्मेनिया की छवि की तुलना कीजिए।

उत्तर :

1. भारत माता भारत राष्ट्र की तथा जर्मेनिया जर्मन राष्ट्र की छवि को दर्शाती है।
2. भारत माता की छवि प्रसिद्ध चित्रकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने 1905 में बनाई थी। जबकि जर्मेनिया की छवि चित्रकार फिलिप वेट ने 1848 में बनायी थी।
3. भारतमाता को अवीन्द्रनाथ द्वारा बनाई गई छवि में संन्यासिनी के रूप में दर्शाया गया है।
   - वह शान्त, गम्भीर, दैवी और आध्यात्मिक गुणों से युक्त दिखाई देती है।
   - भारत माता की छवि शिक्षा, भोजन और कपड़े दे रही है। एक हाथ में माला उसके संन्यासी गुण को प्रकट करती है।
   - दूसरी ओर जर्मेनिया को बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहने दिखाया गया है क्योंकि बलूत जर्मन वीरता का प्रतीक है।
   - जर्मेनिया को एक वीर, साहसी तथा देश की रक्षा करने वाली महिला के रूप में दर्शाया गया है।
4. भारत माता की एक दूसरी छवि में भारत माता के हाथों में त्रिशूल है और वह हाथी व शेर के बीच खड़ी है। जो शक्ति व सत्ता के प्रतीक है।
   - जर्मेनिया का दूसरा चित्र राइन नदी पर पहरा देते हुए का बनाया गया है जिसके हाथ में तलवार है तथा इस तलवार पर लिखा है –

     ''जर्मन तलवार जर्मन राइन की रक्षा करती है।''
5. भारत माता की छवि ने भारत में तथा जर्मेनिया की छवि ने जर्मनी में राष्ट्रवाद विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here